दो ध्रुवीयता का अंत

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» बर्लिन की दीवार का गिरना और 'दूसरी दुनिया' का अंत

प्रश्न 1 (आसान). बर्लिन की दीवार किस शहर में बनी थी?
उत्तर – बर्लिन

प्रश्न 2 (आसान). बर्लिन की दीवार कब गिरी?
उत्तर – 1989

प्रश्न 3 (मध्यम). 'दूसरी दुनिया' शब्द से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – दूसरी दुनिया सोवियत संघ के प्रभाव वाले साम्यवादी देशों के समूह को कहते थे, जो दूसरे विश्व युद्ध के बाद अस्तित्व में आया था।

प्रश्न 4 (कठिन). बर्लिन की दीवार के गिरने से शीत युद्ध पर क्या असर पड़ा?
उत्तर – बर्लिन की दीवार का गिरना शीत युद्ध की समाप्ति का एक बहुत बड़ा प्रतीक था। इसने साम्यवादी खेमे के अंत और जर्मनी के एकीकरण का रास्ता खोला, जिससे दुनिया में 'दो ध्रुवीयता' का अंत हुआ।

» सोवियत प्रणाली की विशेषताएँ

प्रश्न 5 (आसान). सोवियत संघ किस क्रांति के बाद अस्तित्व में आया?
उत्तर – 1917 की समाजवादी क्रांति।

प्रश्न 6 (आसान). सोवियत प्रणाली का मुख्य उद्देश्य किसका विरोध करना था?
उत्तर – पूंजीवादी व्यवस्था का।

प्रश्न 7 (मध्यम). सोवियत प्रणाली की राजनीतिक धुरी कौन सी पार्टी थी?
उत्तर – कम्युनिस्ट पार्टी।

प्रश्न 8 (कठिन). सोवियत संघ में अर्थव्यवस्था का स्वरूप कैसा था? क्या इसमें निजी संपत्ति को महत्व दिया जाता था?
उत्तर – सोवियत संघ में अर्थव्यवस्था योजनाबद्ध और पूरी तरह से राज्य के नियंत्रण में थी। निजी संपत्ति को समाप्त करने और समानता के सिद्धांत पर समाज रचने का प्रयास किया गया था, इसलिए निजी संपत्ति को महत्व नहीं दिया जाता था।

» सोवियत प्रणाली की कमियाँ

प्रश्न 9 (आसान). सोवियत संघ में किस पार्टी का शासन था?
उत्तर – कम्युनिस्ट पार्टी

प्रश्न 10 (आसान). क्या सोवियत नागरिकों को अपनी बात कहने की आज़ादी थी?
उत्तर – नहीं

प्रश्न 11 (मध्यम). सोवियत प्रणाली में 'नौकरशाही के शिकंजे' का क्या अर्थ है?
उत्तर – नौकरशाही के शिकंजे का अर्थ है कि सरकारी अधिकारियों का तंत्र बहुत सख्त और पेचीदा हो गया था, जिससे आम लोगों को काम करवाने में बहुत दिक्कतें आती थीं और उनकी कोई सुनवाई नहीं होती थी।

प्रश्न 12 (कठिन). सोवियत प्रणाली में लोकतंत्र की कमी ने किस प्रकार लोगों की आकांक्षाओं को प्रभावित किया?
उत्तर – लोकतंत्र की कमी के कारण लोगों को अपनी सरकार के गलत फैसलों पर सवाल उठाने या अपनी असहमति व्यक्त करने की आज़ादी नहीं थी। इससे उनकी राजनीतिक और आर्थिक आकांक्षाएँ पूरी नहीं हो पा रही थीं, क्योंकि सरकार जनता के प्रति जवाबदेह नहीं थी। लोग अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं को सरकार तक नहीं पहुँचा पा रहे थे, जिससे व्यवस्था के प्रति असंतोष बढ़ा।

» गोर्बाचेव के सुधार और सोवियत संघ का विघटन

प्रश्न 13 (आसान). मिखाइल गोर्बाचेव किस दशक में सोवियत संघ के महासचिव बने?
उत्तर – 1980 के दशक के मध्य में।

प्रश्न 14 (आसान). गोर्बाचेव के दो मुख्य सुधारों के नाम क्या थे?
उत्तर – पेरेस्त्रोइका और ग्लासनोस्त।

प्रश्न 15 (मध्यम). 'ग्लासनोस्त' का सोवियत संघ की राजनीति पर क्या असर हुआ?
उत्तर – ग्लासनोस्त (खुलापन) ने लोगों को सरकार की आलोचना करने और अपनी राय व्यक्त करने की अनुमति दी, जिससे जनता का असंतोष उजागर हुआ और कम्युनिस्ट पार्टी की सत्ता पर सवाल उठे।

प्रश्न 16 (कठिन). 1991 का तख्तापलट असफल क्यों रहा और इसका सोवियत संघ के विघटन पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – तख्तापलट कम्युनिस्ट पार्टी के गरमपंथियों द्वारा गोर्बाचेव को हटाने का प्रयास था, लेकिन इसे जनता का समर्थन नहीं मिला और यह असफल रहा। इसकी असफलता ने सोवियत संघ की केंद्रीय सत्ता की कमज़ोरी को उजागर किया और विभिन्न गणराज्यों में स्वतंत्रता की मांग को और तेज़ कर दिया, जिससे शीघ्र ही सोवियत संघ का विघटन हो गया।

» सोवियत संघ के विघटन के कारण

प्रश्न 17 (आसान). सोवियत संघ के विघटन का एक आर्थिक कारण बताइए।
उत्तर – उपभोक्ता वस्तुओं की कमी और अर्थव्यवस्था में गतिरोध।

प्रश्न 18 (आसान). गोर्बाचेव के किन सुधारों ने विघटन की प्रक्रिया को तेज़ किया?
उत्तर – पेरेस्त्रोइका (आर्थिक पुनर्गठन) और ग्लासनोस्त (खुलापन)।

प्रश्न 19 (मध्यम). सोवियत संघ के लोग अपनी व्यवस्था की तुलना पश्चिमी देशों से क्यों करने लगे थे?
उत्तर – उन्हें पश्चिम की तकनीकी और आर्थिक तरक्की के बारे में जानकारी मिली, और उन्हें एहसास हुआ कि सोवियत व्यवस्था पिछड़ रही है।

प्रश्न 20 (कठिन). कम्युनिस्ट पार्टी का सोवियत संघ के विघटन में क्या योगदान था?
उत्तर – कम्युनिस्ट पार्टी 70 सालों से सत्ता में थी, वह अलोकतांत्रिक हो गई थी, उसमें भ्रष्टाचार बढ़ गया था, और वह जनता के प्रति जवाबदेह नहीं रह गई थी, जिससे जनता का भरोसा उठ गया।

» विघटन की परिणतियाँ (परिणाम)

प्रश्न 21 (आसान). सोवियत संघ के विघटन का सबसे पहला और मुख्य परिणाम क्या था?
उत्तर – शीत युद्ध की समाप्ति।

प्रश्न 22 (आसान). सोवियत संघ के टूटने के बाद विश्व में किस देश की ताकत बढ़ गई?
उत्तर – अमेरिका।

प्रश्न 23 (मध्यम). शीत युद्ध की समाप्ति से हथियारों की होड़ पर क्या असर पड़ा?
उत्तर – हथियारों की होड़ समाप्त हो गई और शांति की संभावना बढ़ी।

प्रश्न 24 (कठिन). सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व व्यवस्था 'एकध्रुवीय' क्यों बन गई? स्पष्ट करें।
उत्तर – सोवियत संघ के विघटन के बाद, अमेरिका अकेला सबसे ताकतवर देश बच गया, जिससे कोई और महाशक्ति उसे चुनौती देने वाली नहीं थी। यही कारण था कि विश्व व्यवस्था 'एकध्रुवीय' बन गई, जहां अमेरिका का दबदबा था।

» 'शॉक थेरेपी': साम्यवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण

प्रश्न 25 (आसान). शॉक थेरेपी का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – साम्यवादी अर्थव्यवस्था से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में तेज़ी से बदलाव लाना।

प्रश्न 26 (आसान). शॉक थेरेपी में किस प्रकार के स्वामित्व को प्राथमिकता दी गई?
उत्तर – निजी स्वामित्व को।

प्रश्न 27 (मध्यम). शॉक थेरेपी अपनाने वाले देशों में 'राज्य की संपत्ति के निजीकरण' का क्या मतलब था?
उत्तर – इसका मतलब था कि सरकार के स्वामित्व वाले कारखाने, खेत और दूसरी संपत्तियां अब निजी कंपनियों या व्यक्तियों को बेच दी जाएंगी।

प्रश्न 28 (कठिन). विश्व बैंक और IMF का 'शॉक थेरेपी' में क्या योगदान था?
उत्तर – ये संस्थाएँ उन देशों को पूँजीवाद की ओर संक्रमण के लिए वित्तीय सहायता (कर्ज़) और तकनीकी सलाह देती थीं।

» 'शॉक थेरेपी' के परिणाम

प्रश्न 29 (आसान). शॉक थेरेपी के कारण अर्थव्यवस्था को क्या नुकसान हुआ?
उत्तर – अर्थव्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई, और अधिकतर उद्योग बंद हो गए या औने-पौने दामों में बेच दिए गए।

प्रश्न 30 (आसान). मुद्रास्फीति का क्या अर्थ है और 'शॉक थेरेपी' के बाद यह क्यों बढ़ गई?
उत्तर – मुद्रास्फीति का अर्थ है चीज़ों के दाम बढ़ जाना और पैसे की कीमत कम हो जाना। शॉक थेरेपी के बाद सरकार द्वारा दिए गए वाउचर और लोगों की जमापूंजी महंगाई के कारण खत्म हो गई।

प्रश्न 31 (मध्यम). 'इतिहास की सबसे बड़ी गैराज सेल' किसे कहा गया और क्यों?
उत्तर – 'इतिहास की सबसे बड़ी गैराज सेल' उन लगभग 90% उद्योगों को कहा गया जिन्हें 'शॉक थेरेपी' के दौरान निजी कंपनियों को औने-पौने दामों पर बेच दिया गया था, जिससे अर्थव्यवस्था को बहुत नुकसान हुआ।

प्रश्न 32 (कठिन). शॉक थेरेपी के कारण समाज में कौन-कौन से नए वर्ग उभरे और उनके बीच क्या संबंध थे?
उत्तर – शॉक थेरेपी के कारण समाज में दो बिल्कुल विपरीत वर्ग उभरे: एक छोटा सा बहुत अमीर वर्ग, जिसने तेजी से निजीकरण का फायदा उठाया; और एक बड़ा गरीब वर्ग, जिसने अपने सामाजिक कल्याण और जमापूंजी खो दी। इन दोनों वर्गों के बीच भयानक आर्थिक असमानता आ गई।

» संघर्ष और तनाव: पूर्व सोवियत गणराज्यों की स्थिति

प्रश्न 33 (आसान). सोवियत संघ के विघटन के बाद, किस क्षेत्र में गृह युद्ध की स्थिति बनी रही?
उत्तर – मध्य एशिया, खासकर ताजिकिस्तान में।

प्रश्न 34 (आसान). चेचन्या और दागेस्तान किस देश के भीतर के गणराज्य थे जहाँ अलगाववादी आंदोलन हुए?
उत्तर – रूस के।

प्रश्न 35 (मध्यम). मध्य एशिया के गणराज्यों में संघर्ष का एक मुख्य कारण क्या था, जिसके कारण बाहरी ताकतों की भी दखल बढ़ी?
उत्तर – हाइड्रोकार्बनिक (पेट्रोलियम) संसाधनों का विशाल भंडार।

प्रश्न 36 (कठिन). पूर्व सोवियत गणराज्यों में संघर्ष और तनाव के क्या-क्या मुख्य कारण थे, कोई तीन बताइए।
उत्तर – अलगाववादी आंदोलन (जैसे चेचन्या में), गृह युद्ध (जैसे ताजिकिस्तान में), सांप्रदायिक संघर्ष, नदी-जल विवाद, और बाहरी ताकतों की दखल।

» भारत और सोवियत संघ/रूस के संबंध

प्रश्न 37 (आसान). शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ ने भारत के किस मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र में समर्थन दिया था?
उत्तर – कश्मीर मुद्दे पर।

प्रश्न 38 (आसान). सोवियत संघ में भारत की कौन सी सांस्कृतिक चीज़ बहुत लोकप्रिय थी?
उत्तर – हिंदी फिल्में और भारतीय संस्कृति।

प्रश्न 39 (मध्यम). सोवियत संघ के विघटन के बाद भी भारत के रूस के साथ संबंध क्यों गहरे बने रहे?
उत्तर – आपसी विश्वास, साझा हित (जैसे बहुध्रुवीय विश्व का सपना), ऊर्जा आपूर्ति, आतंकवाद पर सूचना आदान-प्रदान और रूस भारत का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता है, इन सब कारणों से।

प्रश्न 40 (कठिन). भारत को रूस के साथ अपने संबंधों से क्या फायदे हुए हैं? किन्हीं तीन का उल्लेख करें।
उत्तर – भारत को कश्मीर मुद्दे पर समर्थन, ऊर्जा-आपूर्ति में मदद (खासकर तेल संकट के समय), अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद से संबंधित सूचनाओं का आदान-प्रदान, और पश्चिम एशिया में पहुंच बनाने जैसे कई फायदे हुए हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. बर्लिन की दीवार कब बनाई गई थी और इसे क्यों गिराया गया?

› पहला चरण: बर्लिन की दीवार 1961 में बनाई गई थी।

› दूसरा चरण: यह दीवार पूंजीवादी पश्चिमी बर्लिन को साम्यवादी पूर्वी बर्लिन से अलग करती थी, और शीत युद्ध के दौरान जर्मनी के विभाजन का प्रतीक थी।

› तीसरा चरण: 1989 में पूर्वी जर्मनी की आम जनता ने इस दीवार को गिरा दिया क्योंकि वे साम्यवादी शासन और उसकी पाबंदियों से आज़ादी चाहते थे। यह 'दूसरी दुनिया' के पतन और शीत युद्ध की समाप्ति का प्रतीक था।

उत्तर – बर्लिन की दीवार 1961 में बनाई गई थी और 9 नवंबर, 1989 को पूर्वी जर्मनी की जनता ने इसे गिरा दिया क्योंकि वे साम्यवादी शासन से मुक्ति और आज़ादी चाहते थे। यह शीत युद्ध के अंत का सबसे बड़ा प्रतीक बनी।

उदाहरण 2. सोवियत प्रणाली का मुख्य उद्देश्य क्या था और इसकी राजनीतिक व्यवस्था किस पर आधारित थी?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि सोवियत प्रणाली 1917 की समाजवादी क्रांति के बाद बनी थी।

› इसका मुख्य उद्देश्य पूंजीवाद का विरोध करना था, क्योंकि पूंजीवाद में धन और संपत्ति कुछ ही लोगों के हाथ में होती है।

› इसके बजाय, इसका लक्ष्य एक समतामूलक समाज बनाना था, जहाँ सभी लोग बराबर हों और निजी संपत्ति का अस्तित्व न हो।

› राजनीतिक व्यवस्था की बात करें तो, सोवियत प्रणाली की पूरी धुरी कम्युनिस्ट पार्टी थी।

› इसका मतलब है कि केवल एक ही राजनीतिक दल था - कम्युनिस्ट पार्टी, और किसी अन्य राजनीतिक दल या विपक्ष के लिए कोई जगह नहीं थी।

› सरकार और पार्टी मिलकर अर्थव्यवस्था को योजनाबद्ध तरीके से नियंत्रित करती थीं, ताकि सबका भला हो।

उत्तर – सोवियत प्रणाली का मुख्य उद्देश्य पूंजीवाद का विरोध करके एक समतामूलक समाज स्थापित करना था, जहाँ निजी संपत्ति न हो। इसकी राजनीतिक व्यवस्था पूरी तरह से कम्युनिस्ट पार्टी के प्रभुत्व पर आधारित थी, जिसमें कोई अन्य राजनीतिक दल या विपक्ष मौजूद नहीं था।

उदाहरण 3. सोवियत प्रणाली की किन्हीं तीन प्रमुख कमियों का वर्णन कीजिए।

› पहला, हमें याद रखना चाहिए कि सोवियत संघ में सिर्फ एक ही राजनीतिक दल था - कम्युनिस्ट पार्टी। इसका मतलब था कि कोई विपक्ष नहीं था और नागरिकों को अपनी बात कहने की आज़ादी नहीं थी।

› दूसरा, धीरे-धीरे सरकारी अधिकारियों, यानी नौकरशाही, का दबदबा इतना बढ़ गया कि आम लोगों का जीवन मुश्किल हो गया। सरकार सत्तावादी होती चली गई।

› तीसरा, सोवियत संघ में 15 गणराज्य थे, लेकिन उनमें रूस का हर मामले में प्रभुत्व था। बाकी गणराज्यों के लोगों को लगता था कि उनकी उपेक्षा की जा रही है और उनकी सांस्कृतिक पहचान को महत्व नहीं दिया जा रहा।

उत्तर – सोवियत प्रणाली की तीन प्रमुख कमियाँ थीं: कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभुत्व और एक-दलीय शासन, नौकरशाही का बढ़ता शिकंजा और सत्तावादी शासन, और रूस का अन्य गणराज्यों पर प्रभुत्व जिसके कारण क्षेत्रीय उपेक्षा हुई।

उदाहरण 4. गोर्बाचेव के 'ग्लासनोस्त' सुधार का सोवियत संघ पर क्या प्रभाव पड़ा?

› सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि 'ग्लासनोस्त' का अर्थ क्या था। ग्लासनोस्त का अर्थ था 'खुलापन' और 'पारदर्शिता'।

› इसका मतलब था कि लोग सरकार की नीतियों पर खुलकर चर्चा कर सकते थे, आलोचना कर सकते थे और अपनी राय दे सकते थे, जो पहले सोवियत व्यवस्था में संभव नहीं था।

› प्रभाव यह हुआ कि जब लोगों को बोलने की आज़ादी मिली, तो सोवियत संघ में जमा हुआ असंतोष, भ्रष्टाचार और आर्थिक समस्याओं के बारे में लोग खुलकर सामने आए।

› इसने कम्युनिस्ट पार्टी की सत्ता पर सवाल उठाए और विभिन्न गणराज्यों में राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा दिया, जिससे अंततः सोवियत संघ के विघटन की प्रक्रिया तेज़ हुई।

उत्तर – ग्लासनोस्त के कारण सोवियत संघ में खुलापन आया, जिससे जनता का असंतोष सामने आया, कम्युनिस्ट पार्टी की आलोचना बढ़ी और राष्ट्रवादी भावनाओं को बल मिला, जो सोवियत संघ के विघटन का एक प्रमुख कारण बना।

उदाहरण 5. सोवियत संघ के विघटन के किन्हीं तीन मुख्य कारणों को संक्षेप में समझाइए।

› पहला कारण: आर्थिक गतिरोध। देखो बच्चों, सोवियत संघ ने अपने ज़्यादातर संसाधन हथियार बनाने में और अपनी सेना पर खर्च किए। उन्हें अमेरिका से होड़ करनी थी ना? इसका नतीजा ये हुआ कि उनके यहां आम लोगों के लिए ज़रूरी सामान, जैसे अच्छे कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक्स, यहां तक कि कभी-कभी खाने की चीज़ें भी कम पड़ने लगीं। अर्थव्यवस्था ठहर सी गई थी।

› दूसरा कारण: पश्चिमी देशों से तुलना। सोवियत संघ हमेशा ये दावा करता था कि उनकी व्यवस्था पश्चिमी पूंजीवादी देशों से बेहतर है। लेकिन जब लोगों को धीरे-धीरे पश्चिमी देशों की तरक्की के बारे में पता चला, खासकर सूचना और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में, तो उन्हें अपनी व्यवस्था का पिछड़ापन साफ दिखाई देने लगा। इस सच्चाई ने उन्हें बहुत निराश किया। उन्हें लगा कि उन्हें झूठ बोला गया है।

› तीसरा कारण: राष्ट्रवादी भावनाएँ और संप्रभुता की इच्छा। सोवियत संघ कई गणराज्यों को मिलाकर बना था, जैसे रूस, यूक्रेन, बेलारूस, बाल्टिक देश वगैरह। इनमें से बहुत से गणराज्यों को लगता था कि वे सोवियत संघ के नियंत्रण में अपनी पहचान खो रहे हैं। जैसे ही थोड़ी आज़ादी मिली, इन देशों में अपनी आज़ादी और संप्रभुता के लिए आंदोलन तेज़ हो गए, और वो सोवियत संघ से अलग होना चाहते थे।

उत्तर – इस प्रकार, आर्थिक गतिरोध, पश्चिमी देशों से तुलना और गणराज्यों की बढ़ती राष्ट्रवादी भावनाओं ने सोवियत संघ के विघटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उदाहरण 6. सोवियत संघ के विघटन के तीन प्रमुख परिणाम क्या थे? प्रत्येक परिणाम को संक्षेप में समझाइए।

› पहला परिणाम था 'शीत युद्ध की समाप्ति'। जब सोवियत संघ खत्म हुआ, तो पूंजीवाद और साम्यवाद की लड़ाई, जो शीत युद्ध का आधार थी, वो भी खत्म हो गई। दुनिया में हथियारों की होड़ कम हुई और शांति की नई उम्मीद जगी।

› दूसरा परिणाम था 'विश्व राजनीति में शक्ति संबंधों का बदलना'। अब दो महाशक्तियां नहीं रहीं। अमेरिका अकेला सबसे ताकतवर देश बन गया। इसे 'एकध्रुवीय विश्व' कहा जाता है, जहां एक ही शक्ति का दबदबा होता है। विश्व बैंक और IMF जैसी संस्थाएं भी अब पश्चिमी देशों, खासकर अमेरिका के प्रभाव में काम करने लगीं।

› तीसरा परिणाम था 'नए देशों का उदय'। सोवियत संघ से अलग होकर कई नए देश बने, जैसे रूस, यूक्रेन, जॉर्जिया, कजाकिस्तान आदि। इन सभी देशों की अपनी अलग पहचान और विदेश नीति थी। कुछ पश्चिमी देशों से जुड़ना चाहते थे, तो कुछ ने अपनी अलग राह चुनी।

उत्तर – सोवियत संघ के विघटन के तीन प्रमुख परिणाम थे: शीत युद्ध की समाप्ति, विश्व राजनीति में शक्ति संबंधों का बदलना (एकध्रुवीय विश्व का उदय), और नए देशों का उदय।

उदाहरण 7. शॉक थेरेपी के तहत सोवियत संघ के गणराज्यों में कौन-कौन से प्रमुख आर्थिक बदलाव किए गए?

› पहला कदम था 'निजी स्वामित्व' को सबसे महत्वपूर्ण मानना। यानी अब ज़्यादातर चीजें सरकार की नहीं, बल्कि लोगों की निजी संपत्ति होंगी।

› दूसरा, राज्य की जो भी संपत्ति थी, जो उद्योग थे, खेत थे, सब कुछ निजी हाथों में, यानी आम लोगों या कंपनियों को बेच दिया गया। इसे 'निजीकरण' कहते हैं।

› तीसरा, 'सामूहिक खेतों' को खत्म करके 'निजी फार्म' बनाए गए, ताकि लोग अपनी मर्जी से खेती कर सकें और बाज़ार में बेच सकें।

› चौथा, मुक्त व्यापार और वित्तीय खुलेपन को अपनाया गया। इसका मतलब था कि दूसरे देशों के साथ बिना रोकटोक व्यापार करना और अपनी मुद्रा को दूसरों की मुद्रा में बदलना आसान बनाना।

› और पाँचवाँ, इन सब बदलावों में विश्व बैंक (World Bank) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) जैसी संस्थाओं ने इन देशों को कर्ज़ और सलाह दी।

उत्तर – शॉक थेरेपी में निजीकरण, सामूहिक खेती का अंत, मुक्त व्यापार, वित्तीय खुलापन और पश्चिमी देशों की संस्थाओं का मार्गदर्शन, ये सब प्रमुख आर्थिक बदलाव थे।

उदाहरण 8. 'शॉक थेरेपी' के किन्हीं तीन मुख्य परिणामों का वर्णन कीजिए।

› पहला परिणाम: अर्थव्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई। 'शॉक थेरेपी' के कारण उद्योगों को औने-पौने दामों पर बेच दिया गया, जिससे लगभग 90% उद्योग बंद हो गए या खराब हो गए। इसे 'इतिहास की सबसे बड़ी गैराज सेल' भी कहा गया, क्योंकि सब कुछ बर्बाद हो गया।

› दूसरा परिणाम: मुद्रास्फीति बहुत बढ़ गई। सरकार ने लोगों को जो भी पैसा दिया, वो महंगाई के कारण बहुत कम हो गया। लोगों की जमापूंजी खत्म हो गई क्योंकि चीजों की कीमतें आसमान छूने लगीं।

› तीसरा परिणाम: गरीबी में भयानक वृद्धि हुई और समाज में असमानता बढ़ गई। शॉक थेरेपी ने पुराने सामाजिक कल्याण के कार्यक्रमों को खत्म कर दिया। जो लोग अमीर थे, उन्होंने फायदा उठाया और गरीब और गरीब होते गए। एक छोटा सा वर्ग बहुत अमीर हो गया, और अधिकतर लोग गरीब हो गए।

› चौथा परिणाम: एक संगठित आपराधिक वर्ग का उदय हुआ, जिसने आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करना शुरू कर दिया। ये लोग अवैध तरीके से पैसे कमाते थे, जिससे समाज में और ज्यादा अस्थिरता आ गई।

उत्तर – 'शॉक थेरेपी' के मुख्य परिणाम थे अर्थव्यवस्था का चरमराना, भयानक मुद्रास्फीति और गरीबी में बेतहाशा वृद्धि।

उदाहरण 9. सोवियत संघ के विघटन के बाद, चेचन्या और दागेस्तान में किस प्रकार का आंदोलन चला, और रूस ने इससे निपटने के लिए क्या तरीका अपनाया?

› पहला, हमें यह समझना होगा कि सोवियत संघ के टूटने के बाद इन गणराज्यों को अपनी पहचान और स्वतंत्रता की भावना बहुत बढ़ गई थी।

› दूसरा, चेचन्या और दागेस्तान, ये दोनों रूस के भीतर ही गणराज्य थे। यहाँ के लोगों ने रूस से अलग होने के लिए हिंसक अलगाववादी आंदोलन चलाए, यानी वे रूस का हिस्सा नहीं रहना चाहते थे।

› तीसरा, रूस ने इन आंदोलनों को दबाने के लिए सैन्य कार्रवाई का सहारा लिया। उन्होंने बमबारी की और बल प्रयोग किया, जिससे मानवाधिकारों का बहुत उल्लंघन भी हुआ।

› आखिरी में, यह सब दिखाता है कि कैसे एक बड़े देश के टूटने के बाद छोटे-छोटे हिस्सों में भी अस्थिरता और हिंसा फैल सकती है।

उत्तर – चेचन्या और दागेस्तान में हिंसक अलगाववादी आंदोलन चले, और रूस ने इनसे निपटने के लिए सैन्य कार्रवाई और बमबारी का सहारा लिया, जिससे मानवाधिकारों का उल्लंघन हुआ।

उदाहरण 10. शीत युद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंधों के किन्हीं चार प्रमुख आयामों का वर्णन करें।

› पहला आयाम है 'आर्थिक संबंध'। सोवियत संघ ने भारत के सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को बहुत मदद दी, खासकर इस्पात कारखानों और हैवी इलेक्ट्रिकल्स जैसे बड़े उद्योगों में। उन्होंने रुपये को माध्यम बनाकर व्यापार किया, जब भारत के पास विदेशी मुद्रा की कमी थी।

› दूसरा है 'राजनीतिक संबंध'। कश्मीर के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र में सोवियत संघ ने हमेशा भारत का समर्थन किया। 1971 के पाकिस्तान युद्ध में भी सोवियत संघ भारत के साथ खड़ा रहा, जो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण था।

› तीसरा 'सैन्य संबंध' है। सोवियत संघ ने भारत को ऐसे समय में हथियार और सैन्य तकनीक दी, जब कोई और देश अपनी तकनीक देने को तैयार नहीं था। उन्होंने भारत के साथ मिलकर सैन्य उपकरण बनाने के समझौते भी किए।

› और चौथा है 'सांस्कृतिक संबंध'। सोवियत संघ में भारतीय संस्कृति और हिंदी फिल्में बहुत लोकप्रिय थीं। राज कपूर से लेकर अमिताभ बच्चन तक के नाम वहाँ घर-घर में जाने जाते थे।

उत्तर – शीत युद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य और सांस्कृतिक, इन चारों आयामों में बहुत गहरे और मजबूत थे।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बर्लिन की दीवार के गिरने की तारीख, इसका महत्व और 'दूसरी दुनिया' का अर्थ याद रखें, क्योंकि इससे सीधे प्रश्न आ सकते हैं।

• सोवियत प्रणाली की विशेषताओं पर सीधा प्रश्न आ सकता है, इसलिए 'एकदलीय शासन' और 'राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था' जैसे बिंदुओं को अच्छे से समझ कर लिखो।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 से 6 नंबर के प्रश्न में पूछा जाता है। सभी कमियों को बिंदुओं में याद रखना और हर बिंदु को कम से कम एक वाक्य में समझाना मत भूलना।

• गोर्बाचेव के सुधारों – पेरेस्त्रोइका और ग्लासनोस्त – का अर्थ और उनके प्रभावों को विस्तार से समझना बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 4 या 6 नंबर में पूछा जाता है। सारे बिंदुओं को अच्छे से समझकर लिखिए और हर कारण को संक्षेप में समझाइए।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 5 या 6 अंकों का प्रश्न आता है, जिसमें तीनों परिणामों को विस्तार से समझाने के लिए कहा जाता है। इसलिए इसे ध्यान से समझो और याद कर लो।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शॉक थेरेपी क्या थी और इसके क्या परिणाम हुए, यह सवाल अक्सर आता है। इसके नकारात्मक परिणामों पर खासकर ध्यान दें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'शॉक थेरेपी' के परिणामों पर सीधा प्रश्न आ सकता है, इसलिए इसके नकारात्मक प्रभावों को बिंदुओं में याद रखना।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि कैसे एक बड़ी व्यवस्था के टूटने के बाद नई चुनौतियाँ और अस्थिरताएँ पैदा होती हैं। चेचन्या, ताजिकिस्तान और मध्य एशिया के ऊर्जा संसाधनों से जुड़े विवादों को ज़रूर याद रखना।

• भारत और रूस के संबंध 1971 के युद्ध, कश्मीर मुद्दे और ऊर्जा सहयोग के संदर्भ में अक्सर बोर्ड परीक्षा में पूछे जाते हैं। इन बिंदुओं को अच्छे से तैयार कर लेना।

एक नज़र में रिवीज़न

› बर्लिन दीवार (1989) का गिरना = 'दूसरी दुनिया' व शीत युद्ध का अंत।

› सोवियत प्रणाली: 1917 क्रांति, पूंजीवाद विरोधी, कम्युनिस्ट पार्टी का राज, राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था।

› कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभुत्व, लोकतंत्र का अभाव, नौकरशाही का शिकंजा, रूस का प्रभुत्व।

› गोर्बाचेव के पेरेस्त्रोइका, ग्लासनोस्त सुधार और 1991 तख्तापलट ने सोवियत संघ का विघटन किया।
› आर्थिक गतिरोध, पश्चिमी तुलना, राष्ट्रवादी भावनाएँ, गोर्बाचेव के सुधार सोवियत विघटन के कारण बने।
› सोवियत विघटन से शीत युद्ध समाप्त, एकध्रुवीय विश्व (अमेरिका का वर्चस्व), नए देशों का उदय।
› साम्यवाद से पूंजीवाद में तीव्र, दर्दभरा संक्रमण: निजीकरण, मुक्त व्यापार, IMF/WB निर्देशित।
› शॉक थेरेपी: अर्थव्यवस्था का पतन, मुद्रास्फीति, गरीबी वृद्धि, सामाजिक असमानता।
› सोवियत संघ के बाद संघर्ष: चेचन्या (अलगाव), ताजिकिस्तान (गृह युद्ध), नदी-जल विवाद।
› भारत-सोवियत/रूस संबंध: आर्थिक, राजनीतिक, सैन्य, सांस्कृतिक सहयोग, बहुध्रुवीय विश्व का साझा लक्ष्य।